पूर्वोत्तर पर्वतीय **विश्वविद्यालय के** सत्ताईसवां **दीक्षांत समारोह पर रिपोर्ट**

दिनांक: 21 मई, 2022

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग का सत्ताईसवां दीक्षांत समारोह 21 मई, 2022 को नेहू, स्थायी परिसर, शिलांग में आयोजित किया गया। इस अवसर के मुख्य अतिथि केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान थे, जिन्होंने वर्ष 2020 और 2021 में उत्तीर्ण छात्रों को डिग्री प्रदान की। उनके साथ मेघालय के मुख्यमंत्री श्री कॉनराड के. संगमा विशिष्ट अतिथि के रूप में और त्रिपुरा विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गंगा प्रसाद प्रसेन मौजूद थे, प्रो. प्रभा शंकर शुक्ला, कुलपति, नेहु, शिलांग ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की। राज्य के शिक्षा मंत्री लाकमेन रिंबुई भी दीक्षांत समारोह में शामिल हुए। इस कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों और विशिष्ट अतिथियों के अलावा, छात्र, अभिभावक, संकाय सदस्य और गैर-शिक्षण कर्मचारी भी शामिल हुए। समारोह के दौरान शैक्षणिक शोभायात्रा का नेतृत्व विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव प्रो. सौरभ कुमार दीक्षित ने किया, जिन्होंने कुलपति की अनुमति से दीक्षांत समारोह के उद्घाटन की घोषणा की। दीक्षांत समारोह के दौरान कुल 15,955 डिग्रियाँ प्रदान की गईं, जिसमें 117 पीएचडी, 8 एम.फिल., 1559 स्नातकोत्तर और 14,271 स्नातक डिग्रियाँ शामिल हैं।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. प्रभा शंकर शुक्ल ने स्वागत भाषण दिया जिन्होंने मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का हृदय से स्वागत किया। कुलपति ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान का स्वागत किया और दीक्षांत समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए उनका आभार भी व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि श्री धर्मेंद्र प्रधान, जिन्हें "उज्ज्वला भाई" के नाम से जाना जाता है, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री के रूप में, इन्होंने बहुत सारी योजनाओं को लागू करने में तथा श्रमशक्ति को बढ़ाकर फिरसे तेयार करने में और भारत के विकास एवम् युवाओं के कौशल के बीच की दूरी को कम करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रो. शुक्ल ने उपस्थित सभी स्नातकों को, और अनुपस्थिती में डिग्री प्राप्त करने वालें सभी स्नातकों को, सभी अभिभावकों को उनके त्याग के लिए, सभी संकाय सदस्यों को उनके समय-समय पर सलाह देने के लिए और विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों को विश्वविद्यालय की अकादमिक उत्कृष्टता और प्रमुख उपलब्धियों के केंद्र के रूप में बनाने में उनके योगदान के लिये याद किया, जिससे दशकों से विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बनी हुई है।कुलपति ने साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. बडाप्लिन वार के उल्लेखनीय योगदान की अभिस्वीकृति कि जिन्हें गणतंत्र दिवस 2022 की पूर्व संध्या पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा

पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कुलपति आशान्वित थे कि शिक्षा मंत्री के कुशल नेतृत्व में उच्च शिक्षा, देश में एक महत्वपूर्ण बदलाव और क्रांतिकारी बदलाव की साक्षीबनेगी।

कुलपति ने आगे कहा कि नेहू अपनी लंबी विरासत पर गर्व करता है और जो बना हुआ है और निरंतर रहा है वह है अनुसंधान और शिक्षा में उत्कृष्टता और नवाचार। नेहू ने 1973 में अपनी स्थापना के बाद से स्थिरता और निरंतरता के साथ अपनी विकास की गति को बनाए रखा है। अपने 49 वर्षों के अस्तित्व में, नेहू उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में सम्मान और विशिष्टता प्राप्त कर अपनी स्थिति बनाए रखने में सफल रहा है। 76 संबद्ध कॉलेजों और मान्यता प्राप्त संस्थानों में अपने बुनियादी ढांचे, विभागों, नए पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय का विकास अभूतपूर्व और उल्लेखनीय रहा है।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 2020-2021 के दौरान संकाय की अनुसंधान गतिविधियों से जुड़े अकादमिक परिणाम राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पत्रिकाओं में; पुस्तकों, पुस्तक अध्यायों और सम्मेलन और संगोष्ठी सहित लगभग 674 प्रकाशनों के साथ संतोषजनक रहे हैं।

अपने भाषण में, कुलपति ने साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. बडाप्लिन वार, खासी भाषा विभाग, नेहू, के उल्लेखनीय योगदान की अभिस्वीकृति कि जिन्हें गणतंत्र दिवस 2022 की पूर्व संध्या पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नेहू के कुलपति के रूप में लगभग आठ महीने के अपने कार्यकाल के बारे में उन्होंने कहा कि “इस परिवार के मुखिया के रूप में, वह प्रत्येक हितग्राही के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा अस्तित्व हमारे छात्रों से है। हमारे छात्रों के हाथों में हमारे विश्वविद्यालय और देश का भविष्य है।”

उन्होंने आगे कहा कि "जब से उन्होंने कुलपति का कार्यभार संभाला है, उन्होंने विश्वविद्यालय के शिक्षण और गैर-शिक्षण बंधुत्व के साथ सीधा संवाद बनाए रखा है। हमने उनकी समस्याओं को समझने की कोशिश की है।"

कुलपति ने भर्ती की चल रही समस्या का उल्लेख करते हुए दोहराया "लंबे समय से लंबित सीएएस पदोन्नति को भी हल किया गया है। शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक दोनों पदों पर सीधी भर्ती के लिए विज्ञापन दिए गए और जल्द ही नई नियुक्तियां की जाएंगी, जिससे हमारे मानव संसाधन और मजबूत होंगे। इस प्रयास में मुझे आप सभी का पूरे हृदय से समर्थन मिल रहा है।"

अनुसंधान के मोर्चे पर, उन्होंने कहा कि " नेहू में अध्ययन के विभिन्न शाखाओं के भीतर तर्कशास्त्रीय चर्चा के माध्यम से, जैव विज्ञान, भौतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में बहुविषयक अनुसंधान किया जा रहा है। कई विभागों ने नए परियोजनाओं का प्रस्ताव दिया है और हम विभिन्न क्षेत्रों से नई निधि प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। नेहू को हमेशा अनुसंधान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में अत्यधिक योगदान देने के लिए जाना जाता है।"

कुलपति ने नेहू की स्थिति को और मजबूत करने के लिए शुरू किए जा रहे विभिन्न समझौता ज्ञापनों पर नेहू की एक विस्तृत स्थिति भी दी। उन्होंने हमें न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उद्यमी होने पर जोर दीया। उन्होंने उल्लेख किया कि नेहू ने रीसर्जेंस फाउंडेशन, नागपुर, आदिवासी अनुसंधान और विकास केंद्र, भुवनेश्वर और आरटीआई, शिलांग के साथ विभिन्न कार्यक्रमों में आपसी सहयोग के साथ मिलकर वंचित समुदायों और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों के लिए क्षमता निर्माण और कौशल वृद्धि के संबंध में वांछनीय उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करने के लिए सभी विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित किया, जिसके लिए हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मामलों के कार्यालय (ओआईए) की स्थापना की गई थी, जो कि सरकारों, संस्थानों और अन्य संबंधित निकायों के साथ सभी अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संबंधों को देखने के लिए स्थापित किया गया था। ओआईए अंतरराष्ट्रीय सहयोग के सभी मामलों में पूरे विश्वविद्यालय के लिए एक स्थान पर सुविधा कार्यालय के रूप में कार्य करेगा। प्रारंभिक कार्य के रूप में, एआईसीटीई योजना के तहत विश्वविद्यालय विस्तृत भारत-अमेरिका सहयोग पर काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा, "अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हमारे छात्रों को शोध अनावरण के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों का दौरा करने का अवसर प्रदान करता है।" उन्होंने उल्लेख किया कि नेहू के छात्र, छात्र विनिमय कार्यक्रम 'आईआरआईएस' के तहत जापान सरकार की एक युवा निमंत्रण योजना के तहत पहले जापान के दौरे पर थे। उन्होंने याद किया, "भारत गणराज्य में कोरिया गणराज्य के राजदूत ने नेहू का दौरा किया और व्यापक क्षेत्रों में, विशेष रूप से शैक्षणिक और आर्थिक मोर्चे पर संभावित सहयोग पर विस्तार से चर्चा की।"

उन्होंने विदेशी गणमान्य व्यक्तियों की नेहू की विभिन्न यात्राओं का भी उल्लेख किया। नेहू और चुलालोंगकोम विश्वविद्यालय, थाईलैंड के बीच भी समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। अंतरिक्ष, ऊर्जा, क्वांटम गणना, साहित्य, भाषा और सामाजिक विज्ञान आदि के क्षेत्र में अनुसंधान और अकादमिक आदान-प्रदान को छूने वाले बहु-पक्षीय विषयों पर विनिमय

कार्यक्रमों और अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए फ्रांसीसी वाणिज्य दूत, अमेरिकी महावाणिज्यदूत की दौरों की व्यवस्था की गई थी। उन्होंने इरास्मस के साथ सहयोग की योजना के बारे में भी बताया जो वर्तमान में प्रगति पर है।

“विश्वविद्यालय के पास एक बहुत मजबूत पूर्व छात्र आधार है। हमारे बहुत से पूर्व छात्रों ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है और अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वोच्च पदों पर रहे हैं। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हमारे पूर्व छात्र विश्वविद्यालय को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए हमारा सहयोग करें। मैं इस दिशा में नेहू पूर्व छात्र संघ को मजबूत कर रहा हूं।“

उद्योग से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने के बारे में कुलपति ने कहा कि शैक्षणिक गतिविधियों और विश्वविद्यालय और उद्योग की निरंतर गतिशील आवश्यकता के बीच की खाई को पाटने के लिए एक आईपीआर सेल कि स्थापना की गयी है। यह मेल वर्तमान प्रतिस्पर्धी वैश्विक परिदृश्य के तहत सामाजिक आर्थिक विकास के लिए अत्याधुनिक जनशक्ति विकसित करने के लिए शिक्षाविदों-उद्योगपतियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देगा।

कुलपति ने आरक्षण नीतियों और कमजोर वर्ग के उत्थान के बारे में विस्तार से बात की और उल्लेख किया कि नेहू ने हमारे विश्वविद्यालय में सामान्य श्रेणी के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को आरक्षण के संबंध में केंद्र सरकार के निर्णय को लागू करने के लिए पहले ही कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया है कि ईडब्ल्यूएस योजना के तहत ढांचागत विकास के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करें। पिछले 9 महीनों में, विश्वविद्यालय के लिए कई योजनाओं के तहत वित्तीय सहायता के संबंध में, मेघालय सरकार के अलावा केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के साथ-साथ यूजीसी, शिक्षा मंत्रालय के साथ संवाद किया गया है।

कुलपति ने 22 अप्रैल 2022 को डॉ. अम्बेडकर फाउंडेशन के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की भी घोषणा की, जिसमें यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए अनुसूचित जाति के छात्रों के प्रशिक्षण के लिए मेघालय सरकार द्वारा विधिवत समर्थित और नामांकित डॉ अम्बेडकर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (डीएसीई) की स्थापना की जायेगी। इसके अलावा नेहू ने मेघालय राज्य के लिए नेहू में एक टैगोर सांस्कृतिक परिसर का भी प्रस्ताव रखा है।

एनईपी 2020 के कार्यान्वयन के लिए, कुलपति ने लोगों को सूचित किया कि टास्क फोर्स और उप-समितियों का गठन किया गया है और विभिन्न स्कूलों में सभी विभागों के लिए एमओओसी और स्वयं समन्वयक की पहचान की गई है। कॉलेजों में एलओसीएफ और एमईई के कार्यान्वयन के लिए, सभी संबद्ध कॉलेजों के प्राचार्य विश्वविद्यालय के कॉलेज डेवलपमेंट काउंसिल (सीडीसी) के माध्यम से शामिल होते हैं। वर्तमान सरकार की नीति के

अनुसार, शिक्षा के नए स्वरूप को 5+3+3+4 के रूप में वर्णित किया गया है। एनईपी 2020 के लागू होने के बाद अब यह और भी अधिक कौशल आधारित होगा, जिसमें छात्रों को न केवल सैद्धांतिक विषयों का अध्ययन करने का अवसर मिलेगा, बल्कि अपने अनुभवात्मक शिक्षण को भी लागू करने का अवसर मिलेगा।

कुलपति ने दीक्षांत समारोह की सामूहिक सभा क़े अवसर पर यह घोषणा करते हुए कहां कि नेहू 2023 में अपना स्वर्ण जयंती वर्ष "नेहू के 5 दशक: उपलब्धि की विरासत", इस टैगलाइन के साथ मनाएगा।

उन्होंने भविष्य के लिए लक्ष्य रखा और इस बात की अनंत संभावनाओं की कल्पना की कि नेहू एक साथ काम करके क्या हासिल कर सकता है:

- पूरे उत्तर-पूर्व में अग्रणी केंद्रीय विश्वविद्यालय।
- विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आईपीआर ज्ञान और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके नवीन उत्पादों और व्यवसाय मॉडल बनाने के लिए सफल स्टार्ट-अप का केंद्र बनेगा।
- संकाय और कर्मचारियों के लिए एक उत्साहजनक कार्य वातावरण, जहां योग्यता और कड़ी मेहनत को मान्यता दी जाती है और उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा।
- सतत विकास और सामग्री/संसाधनों के पुनर्चक्रण के संदर्भ में एक आदर्श विश्वविद्यालय परिसर।
- नेहू शिलांग की भू-राजनीतिक स्थिति इसे विशाल एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की "पूर्व की ओर देखो नीति" का समर्थन करने और बढ़ाने के लिए एक आदर्श अनुसंधान केंद्र बनाती है।

मेघालय के मुख्यमंत्री श्री. कोनराड के. संगमा ने सम्मानित अतिथि के रूप में अपने भाषण के दौरान सभी दिग्री प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने भी मुख्य अतिथि का स्वागत किया और राज्य के नागरिकों और छात्रों की ओर से नेहू के संबद्ध कॉलेजों को सीयूईटी के दायरे से बाहर रखने के लिए धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री ने बताया कि नेहू जाते समय शिक्षा मंत्री ने कुछ समूहों के मुद्दों को सुनने के लिए वाहन रोका, जो उनके युवाओं कि समस्याओं से जमीनी स्तर पर जुड़ी हुई है। मुख्यमंत्री ने युवाओं को कहा कि वे अपने शौक केप्रति अनुराग रखें और उन्हें कम से कम एक कौशल पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करनी चाहिए जिससे वे सीख सकें। उन्होंने युवाओं को जीवन में बड़े लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए अगले स्तर तक पहुंचने के लिए सही समय और सही उम्र पर परिकलित जोखिम लेने पर भी जोर दिया। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे न तो असफलता से निराश हों और न ही सफलता को अपने सिर पर चढ़ने दें।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने दीक्षांत भाषण के दौरान सभी उत्तीर्ण छात्रों केआगामी जीवन में सफलता की कामना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विचारों को क्रियांवित करने की जगह हैं जहां छात्र अपने विचारों के साथ आते हैं जो बाद मे रचनात्मक रूप लेते हैं और नेहू इस संबंध में अपने कर्तव्य को सफलतापूर्वक पूरा करता रहा है। उन्होंने अपने संबोधन में इस बात पर भी प्रकाश डाला कि प्रधानमंत्री ने प्रमुखता से कहा है कि सभी स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और सभी देश की राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, जो NEP 2020 की एक महत्वपूर्ण विशेषता भी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्वतंत्रता और नवाचार के नए विचार विश्वविद्यालयों में अंकुरित होते हैं, जहां समाज की आकांक्षाओं और कल्याण की पूर्ति के लिए तकनीकी, वैज्ञानिक और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान किये जातेहैं।उन्होंने आगे छात्रों से सरकारी नौकरियों से बाहर निकलने का आग्रह किया और कहा कि छात्रों को नौकरी देने वाले बनने का प्रयास करना चाहिए और समाज की जिम्मेदारी लेनी चाहिए तथा अपना योगदान देना चाहिए।

विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव ने कुलपति की अनुमति से शैक्षणिक शोभायात्रा के बाद दीक्षांत समारोह की समाप्ति की घोषणा की।